॥ ॐ ॥
॥ जय श्री राम ॥

॥ शंका समाधान ॥

विषय सूची

क्या श्री राम, वाल्मीकि रामायण, श्री राम कथा काल्पनिक है ? 3

रामायण का काल-निर्णय 5

क्या रामायण का रचना काल बौद्ध धर्म के बाद का है ? 6

पौराणिक साहित्य में राम-कथा 8

- महाभारत 8
- हरिवंश पुराण 8
- विष्णु पुराण 9
- वायु पुराण 9
- भागवत पुराण 9
- कूर्म पुराण 9
- अग्नि पुराण 10
- नारद पुराण 10
- ब्रह्म पुराण 11

गरड़ पुराण 11
स्कन्द पुराण 11
ब्रह्मा वैवर्त पुराण 12
ब्रह्माण्ड पुराण 12
नृसिंह-पुराण 12
विष्णु धमोत्तर पुराण 13
शिवमहापुराण 13
श्रीमद्देवी भागवत पुराण 13
कालिका पुराण 14
सेतु बंध अथवा राम सेतु श्री राम के अस्तित्व का जीवंत उदाहरण ? .. 14
Darvin theory of Evolution and Big Bang Theory 17
क्या आर्य जाति बाहर से भारत में आई थी ? 21

॥ जय श्री राम ॥

क्या श्री राम, वाल्मीकि रामायण, श्री राम कथा काल्पनिक है ?

इस प्रश्न का उत्तर जानने के लिए सर्वप्रथम हमें यह जानना होगा की वैदिक साहित्य में श्री राम और रामायण पात्रों का क्या उल्लेख मिलता है। इस पर कोई दो राय नहीं और अधिकतर वैज्ञानिक और इतिहास वेत्ता भी यह मानते हैं की ऋग्वेद मानवसभ्यता का सबसे पुराना धर्म ग्रन्थ है। ऋग्वेद के दशम मण्डल में राम और रामायण के अनेक पात्रों के नाम का उल्लेख मिलता है; जैसे इक्ष्वाकू, दशरथ, राम और सीता इत्यादि ।

इक्ष्वाकू - "यत्येक्ष्वाकुरुप व्रते रेवान् मराययेते" -(ऋग्वेद १०-६०-४)

अर्थात् जिसकी सेवा में धनवान् और प्रतापवान् इक्ष्वाकु की वृद्धि होती है ।

दशरथ- "चत्वारिंशदशरथस्य शोणा: सहस्त्रयागश्रेणि नयन्ति ।" (ऋग्वेद १०-१६-४)
अर्थात् 'दशरथ के चालीस चालोस भूरे रंग के घोड़े एक हजार बोड़ों के दल का नेतृत्व ले रहे हैं । ।

राम - "प्रतद्द :शीमे पृथवाने वेने प्र रामे वोचमसुरे मघवन्तु ।
येयुक्त्वाय पञ्च शतास्मयु पथा विश्राव्येपाम् ॥"
(ऋग्वेद १०-६३-१४)

अर्थात् 'मैने दुःशीम पृथवान, वैन और राम इन यजमानों के लिये यह सूक्त गाया है। इन्होंने पांच सौ घोड़े अथवा रथ जुतवाए जिससे उनका मुझ पर अनुग्रह चारों ओर फैल गया है।'- (ऋग्वेद १०-१३-१४)

सीता यह नाम जो दूसरी प्रार्थना ऋग्वेद के चौथे मंडल में मिलता है , वह 'सीता यंजति' मंत्र का एक अंश है:

"सीते वन्दामहे त्वार्याची सुमगे भव ।
यथा नः सुमना असो यथा नः सुफजा भुवः ॥"
(ऋग्वेद १०-०४-५७)

अर्थात् "हे सीते ! तेरी हम वन्दना करते हैं, हे सौभाग्यवती! कृपा दृष्टि से हमारी ओर अभिमुख हो, जिससे तू हमारे लिए हितकांक्षिणी बने और जिससे तू हमारे लिए सुन्दर फल देनेवाली होवे।"

इस प्रकार इक्ष्वाकु, दशरथ और राम ऋग्वेद से ही प्रभावशाली ऐतिहासिक राजा के रूप में वर्णित है यह निर्विवाद है।

रामायण का काल-निर्णय

ऋग्वेद के आदि काल के सम्बन्ध में विद्वानों के भिन्न-भिन्न विचार हैं। कुछ लोग इसका अविर्भावकाल ईसा से पचहत्तर हजार वर्ष पूर्व और कुछ लोग ईसा से मात्र बारह सौ वर्ष पूर्व मानते हैं। प्रसिद्ध जर्मन विद्वान् जैकोबी का मत है ऋग्वेद ६५ हजार वर्ष ई० पूर्व पुराना है और डा० श्री अविनाश चन्द्र दत्त का मत है की ऋग्वेद ५० से ७५ हजार वर्षे ई० पूर्व है । अंग्रेज विद्वान मैक्समूलर इसका अविर्भावकाल ईसा से एक हजार से बारह सौ वर्ष पूर्व मानते हैं परन्तु मैक्समूलर यह मत केवल लिखित अभिलेखों तक की सीमित है।

यह भी माना जाता है की भारत में लेखनकला का प्रचलन १८ सौ वर्ष ईस्वी पूर्व हुआ और तभी से वेद सहिताएँ लिखी जाने लगी। जब लेखनकला का प्रचलन नहीं था, तब वेदों की रचना मौखिक ही हुया करती थी, लोग उन्हें मौखिक ही कण्ठ रखते थे, इसीसे वेदों का नाम 'अति' भी था।

अधिकाश विद्वानों ने राम को वाल्मीकि के समय में विद्यमान माना है और ऋग्वेद के दशम मण्डल की रचना जिसमें राम और राम

कथा के अनेक पात्रों के नाम का उल्लेख मिलता है । जिसे पाश्चात्य विद्वानों के मतानुसार १५०० वर्ष ई० पूर्व तथा भारतीय विद्वानों ने चार जहर वर्ष ई० पूर्व माना है। अत: यह निर्विवाद है वेद में वर्णित 'राम ऐतिहासिक पुरुष ही हैं और राम वाल्मीकि के समकालीन थे तो मानना होगा कि वाल्मीकि का भी समय चार हजार वर्ष ई० पूर्व है । अत: वाल्मीकि रामायण की रचना भी ईसा से चार हजार वर्ष पूर्व के आसपास ही हुई होगी ।

क्या रामायण का रचना काल बौद्ध धर्म के बाद का है ?

कुछ महानुभाव यह भी मानते हैं की रामायण का रचनाकाल बौद्ध ग्रंथों के बाद का है तो उस पर निम्न तथ्य यह प्रमाणित करते हैं की रामायण का रचना काल गौतम बुद्ध से बहुत पहले का है :

१. बौद्ध और जैन धर्म ग्रंथों में भी श्री राम का आदरपूर्वक उल्लेख किया गया है इसका कारण भी यही है की इतिहास पुरुष के रूप में विख्यात श्री राम अत्यंत आदरणीय चरित्र के रूप मे भारत में सर्वदा से विद्यमान थे ।
२. बौद्ध कवि कुमारलात (१००ई०) की रचनाओं में सर्वसाधारण में रामायण के वाचन का उल्लेख है।

३. अश्वघोष के बुद्ध-चरित से यह विदित होता है कि वह वाल्मीकि रामायण से परिचित और प्रभावित था ।
४. दशरथ जातक में वाल्मीकि का एक श्लोक पालि रूप में पाया जाता है।
५. पाटिलपुत्र को अमातशत्रु ने बसाया था, जो प्राय बुद्ध का समकालीन था; किन्तु पाटिलपुत्र का उल्लेख रामायण में नहीं है । अतः रामायण बुद्ध से पहले की रचना है। यह भी यथार्थ है की बुद्ध के समय कोशल का राजा प्रसेनजित था, उसकी राजधानो श्रावस्ती में थी, लेकिन रामायण में श्रावस्ती लव की राजधानी बतायी गयी है।
६. अयोध्या का नाम भी बौद्ध ग्रन्यो में साकेत मिलता है। इससे यह अनुमान निकलता है कि रामायण उस समय रची गयी जब अयोध्या उजड़ी नहीं थी, न उसका राजधानी हटाकर श्रावस्ती ले जायी गयी थी, न कोशल जनपद को साकेत कहने का प्रचलन चला था
७. रामायण में विशाला और मिथिला इन दो राज्यों के उल्लेख है, किन्तु बुद्ध के समय केवल वैशाली का अस्तित्व था ।

कुछ विद्वान् यह भी प्रमाणित करने का प्रयास करते हैं की रामायण का रचना काल महाभारत के बाद का है। परन्तु ऐसे विद्वान भूल जाते हैं की महाभारत में रामायण का उल्लेख हैं परन्तु रामायण में महाभारत के किसी पात्र अथवा कथा का उल्लेख उपमा रूप में भी नहीं है, ऐसे में रामायण का रचना काल महाभारत के बाद का होना संभव ही नहीं है ।

पौराणिक साहित्य में राम-कथा

महाभारत

महाभारत की राम-कथा महाभारत में राम-कथा का चार स्थलों पर उल्लेख मिलता है, जिसमे रामोपाख्यान सबसे विस्तृत और महत्वपूर्ण है। इस स्थल के अतिरिक्त राम कथा एवं उसके पात्रों का उल्लेख उपमा आदि के लिए लगभग पचास स्थानों पर भी हुआ है। युद्ध सम्बन्धी द्रोणपर्व में राम-कथा का १४ बार और अन्य पर्वो -भीष्म, कर्ण और शल्यपर्व में ५ बार उल्लेख हुया है। राम-कथा का प्रारण्यपर्व में दो बार वर्णन और १५ बार संकेत मिलता है। इस पर्व में राम के अवतार होने का भी वर्णन मिलता है। कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि वाल्मीकि कृत रामायण के संतुलन में महाभारत की राम-कथा संक्षिप्त रूप में वर्णित है।

हरिवंश पुराण

इस पुराण में राम कथा का संक्षिप्त वर्णन मिलता है. जिसमे रामावतार के उल्लेख के बाद बनवास से लेकर रावण-वध तक रामायण की मुख्य घटनात्रों का वर्णन है तथा रामराज्य की प्रशंसा की गई है। इसमें विष्णु के अवतारों की तालिका में राम का भी नाम दिया गया है। राम कथा सम्बन्धी अध्याय ४१, ५८, ७२, ६३, १०४, १२८ और १३२ है।

विष्णु पुराण

इसमें अयोनिजा सीता का उल्लेख है और रामकथा भी वर्णित है, विष्णु पुराण के चौथे अध्याय में राम-कथा सम्बन्धी एक विवरण मिलता है, जो की हरिवंश की अपेक्षा अधिक विस्तृत है।

वायु पुराण

इसकी राम-कथा विष्णु पुराण से मिलती है। इसके राम-कथा से सम्बन्धित अध्याय २८ एव ८६ द्रष्टव्य हैं।

भागवत पुराण

इसमें राम-कथा सम्बन्धी जो सामग्री मिलती है, उसमें सीता को लक्ष्मी और राम को विष्णु का अवतार माना गया है । सीता स्वयंबर और उनके त्याग की भी कथा का उल्लेख मिलता है । राम-कथा का वर्णन करनेवाले इसके नववे स्कन्ध के दसवें तथा ग्यारहवें अध्याय है।

कूर्म पुराण

कूर्म पुराण में राम कथा की घटनाओं का जो उल्लेख हुआ है, उसका वर्णन पूर्व विभाग -१०, ११, १६. २१ और उत्तर-विभाग के अध्याय ३४ में मिलता है। राम-कथा में गक्षस-वश-वर्णन और सूर्यवंश के अन्तर्गत रामचरित का वर्णन है, जिसमें रावण युद्ध के पश्चात् राम द्वारा शिवलिंग की स्थापना का उल्लेख है और पतिव्रतोपाख्यान मे माया सीता के हरण आदि की घटनाएँ वर्णित हैं।

अग्नि पुराण

इसकी राम-कथा वाल्मीकि रामायण की राम-कथा का सक्षिप्त विवरण है, इसमें राम वनवास का कारण बताया गया है और राम द्वारा माल्यवत् पर्वत पर चतुर्मास यज्ञ करने का उल्लेख है । देखें अध्याय ५ से ११ तक।

नारद पुराण

इसके पूर्व खण्ड में एक सक्षिप्त राम-चरित के बाद बालकाण्ड से युद्धकाण्ड तक द्रविड़ देश में ब्राह्मणों से बांधे हुए विभीषण की राम द्वारा मुक्ति की कथा कही गयी है देखे अध्याय ७६ और उत्तर काण्ड में बालकांड से उत्तरकाण्ड तक समस्त वाल्मीकि रामायण को संक्षिप्त राम-कथा कही गयी है, जिसमें राम और लक्ष्मणादि नारायण-सकर्षणादि के अवतार बताए गए है देखे अध्याय ७५।

ब्रह्म पुराण

'हरिवश' के ४१ वें अध्याय की राम-कथा इसके अध्याय १७६ में ज्यों की त्यों पाई जाती है। १७६वें अध्याय में जहां रावण-चरित्र का विवरण मिलता है, रावण की तपस्या वर्णन के पश्चात् एक संक्षिप्त राम-क्था का उल्लेख मिलता है। इस ग्रन्थ में शेष राम-कथा का विवरण गौतमी-माहात्म्य के अन्तर्गत मिलता है।

गरड़ पुराण

इस ग्रन्थ के १४वें अध्याय में राम-कथा का वर्णन है। इसमें शरूर्पणखा को राम स्वयं कुरूप करते हैं और अयोध्या लौटने पर पितृ कर्म के हेतु गया तीर्थ जाते हैं।

स्कन्द पुराण

इसके माहेश्वरखड के अध्याय ८ में रावण-चरित के पश्चात् रामावतार वर्णन एवं राम द्वारा रावण-वध, वैष्णव-खड में कार्तिकेय माहात्म्य, श्रध्याय २०-२५ मे, अवतार-कारण-वणन के अन्तर्गत, वृन्दा-शाप एव धर्मदत्त और कहला की क्या का विवरण है, जिसमें धर्मदत्त दूसरे जन्म में दशरथ होते हैं। अयोध्या-माहात्म्य में (अध्याय ६) राम के स्वधाम गमन की कथा है । ब्राह्म-खंड के अन्तर्गत--सेतु माहात्म्य में एक संक्षिप्त राम-क्या है, जिसमें सेतुबंध का वर्णन है, देखे अध्याय

२, सेतुबन्ध के पूर्व राम द्वारा शिव-लिंग की स्थापना का वर्णन है , देखें अध्याय ७ ।

ब्रह्मा वैवर्त पुराण

इसमें वेदवती की कथा के पश्चात् सीता-हरण का उल्लेख किया गया है, जिसमें अग्नि द्वारा एक माया रूपी सीता की सृष्टि का वर्णन है, देखें प्रकृति खण्ड अध्याय १४।

ब्रह्माण्ड पुराण

इस पुराण के उत्तर खण्ड 'अध्यात्म रामायण' में राम-कथा का पूर्ण वर्णन मिलता है, जो वाल्मीकि रामायण की ही भांति अत्यन्त महत्वपूर्ण है ।

नृसिंह-पुराण

इस पुराण के छः अध्यायों में थोड़े परिवर्तन के साथ वाल्मीकि रामायण की सक्षिप्त राम -कथा का उल्लेख मिलता है, देखे अध्याय ४७–५२। इस ग्रन्य में राम नारायण के पूर्ण अवतार और लक्ष्मण शेष के अवतार माने गये हैं ।

विष्णु धमोत्तर पुराण

इस पुराण में रावणवध की कथा के पश्चात् भरत द्वारा गन्धर्वों के विरुद्ध युद्ध का उल्लेख हुआ है, देखें २००-२६६, इसके अन्तर्गत एक रावण चरित भी मिलता है, जिसमें राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न क्रमश: नारायण, संकर्षण, प्रद्युम्न और अनिरुद्ध के अवतार माने गये है देखें अध्याय २१२।

शिवमहापुराण

इसमें रुद्रसंहिता के साथ ही साथ सृष्टि खण्ड में नारद-मोह की कथा, देखें अध्याय ३-४, सती खण्ड में सती द्वारा राम की परीक्षा तथा राम का सती ने बतलाना कि मैंने शिव की आज्ञा से अवतार लिया है, देखें अध्याय २४-२६ , युद्ध खण्ड में वृन्दा-श्राप की कथा का उल्लेख, देखें २३।

श्रीमद्देवी भागवत पुराण

इस पुराण में में नवरात्र माहात्म्य के अन्तर्गत रामायण से मिलती हुई राम-कथा का वर्णन मिलता है, इसमें रामने सूर्पणखा को विरूप किया था। इसमें सीताहरण के पश्चात् नारद के उपदेशानुसार राम. रावण पर विजय पाने के निमित्त नवरात्रोपवास करते हैं, इसके अन्त में 'सिंहा रूढा देवी भगवती' रामको दर्शन देकर रावण पर विजय

का आश्वासन देती हैं। इसके पश्चात् राम विनया पूजा करके बानर-सेना सहित सिन्धु की पोर प्रस्थान करते हैं, देखें स्कन्ध ३, अ० २८-३०।

कालिका पुराण

इसमे राम की विजय के निमित्त ब्रह्मा द्वारा दुर्गा की पूजा का वर्णन है, देखें अध्याय ६२ श्लोक २०-३८।

इन धर्म ग्रंथो के अतिरिक्त संस्कृत साहित्य जैसे कालिदास, भास्, जयदेव, अद्वैत, कुमार दास, भट्ट इत्यादि द्वारा कृत ग्रंथो में राम कथा प्रचुरता से विद्यमान है। विदेशों में जैसे इंडोनेशिया, बाली, थाईलैंड में भी रामायण और राम कथा अनन्त काल से विद्यमान है।

सेतु बंध अथवा राम सेतु श्री राम के अस्तित्व का जीवंत उदाहरण ?

श्रीमद वाल्मीकि रामायण के युद्ध काण्ड के २२वें अध्याय मे लिखा की श्री राम के कुपित हो जाने पर स्वयं समुद्र ने श्री राम को नल द्वारा समुद्र पर सेतु बनाने की प्रेरणा दी तथा श्री राम के आज्ञा से नल ने निर्माण कार्य प्रारंभ किया। महाबली वानरों ने बांस इत्यादि अनेक

वृक्षों से अमुद्र को पाट दिया तथा हाथी के सामान बड़ी बड़ी शिलाओं और पर्वतों को उखाड़ कर यंत्रों द्वारा समुद्र ले आते थे तथा उनको नियमानुसार समुद मे डाल देते थे। निर्माण कार्य के समय कुछ वानर सूत पकड़ कर पुल का सीधा होना तय करते थे तथा कुछ नापने के लिए दण्ड को पकड़ते थे । पहले दिन उन्होंने १४ योजन का पुल बाँधा। दुसरे दिन बीस योजन का पुल बाँधा। तीसरे दिन २१ योजन का पुल बाँधा, चौथे दिन २२ योजन का पुल बाँधा तथा पांचवें दिन २३ योजन लम्बा पुल बाँध कर १०० योजन पूर्ण कर दिया।

इसी प्रकार का वर्णन अन्य पुराणों जैसे स्कंद पुराण, विष्णु पुराण, अग्नि पुराण और ब्रह्म पुराण इत्यादि मे भी मिलता है। पद्म पुराण, सृष्टि खंड, के ४० अध्याय में तो इस विषय पर भी वर्णन है की स्वयं श्री राम द्वारा निर्मित पुल टूटा कैसे?

अभी तक राम सेतु के विषय में संदेह प्रकट किया जाता रहा था परन्तु अमेरिका की इंडियाना यूनिवर्सिटी, यूनिवर्सिटी ऑफ नार्थवेस्ट, यूनिवर्सिटी ऑफ कोलोराडो और सर्दन ओरीगन यूनिवर्सिटी के वैज्ञानिकों ने अपने शोध में यह पाया है की 83 किलोमीटर लंबे गहरे इस जल क्षेत्र में चूना पत्थर की चट्टानों को मानव निर्मित माना है। यही नहीं यह भी प्रमाणित किया गया है की पुल पर बिछाए गए विशाल चूना पत्थर कतई प्रकृति की देन नहीं हैं, यह कहीं और से लाए गए हैं। इस पुल की चट्टानें सात हजार साल पुरानी हैं, जबकि उस पर बिछी बालू की परत को चार हजार साल पुरानी माना है।

यदि आप 2000 साल 7000 में से घटा भी दें तो संख्या 5000 साल ईसा पूर्व की बैठती है। अब आप स्वयं विचार कीजिए की क्या 7000 साल पहले ऋषि वाल्मीकि ने गूगल मैप का इस्तेमाल कर के यह जाना था ऐसा कोई पुल भारत के सूदूर दक्षिण में विद्यमान है जिसको मैं अपने कहानी से जोड़ सकता हूँ? या फिर यह अनेको अन्य प्रमाणों के साथ ही स्पष्ट प्रमाण है श्री राम, राम कथा और रामायण के अस्तित्व का।

उपरोक्त सभी उद्धरणों से स्पष्ट है की श्री राम कोई काल्पनिक पुरुष नहीं हैं, न ही रामायण काल्पनिक है। वास्तव में यह मुस्लिम और अंग्रेज शासकों की मानसिकता का परिचायक है जिसने सदैव हिंदू धर्म ग्रंथो पर सवाल उठा कर उन्हें अपने धर्म मे शामिल करने का प्रयास किया है।

यदि आप श्री राम के अस्तित्व पर सवाल उठा रहे है तो आप भारत तथा भारतीयता पर ही सवाल उठा रहे हैं क्योंकि श्री राम के बिना वेद, पुराण, दर्शन शास्त्र, संस्कृत साहित्य, जैन, बौद्ध, सिख धर्म ग्रंथो का भी अस्तित्व नहीं है क्योंकि जैसे की उपरोक्त लेख से प्रमाणित है सभी भारत मे उत्पन्न सभी धर्मों, पन्थो में श्री राम और रामायण का उल्लेख है।

यदि श्री राम का अस्तित्व नहीं है तो जीजस क्राइस्ट और पैगम्बर मोहम्मद का भी अस्तित्व नहीं है क्योंकि कोई भी अपने

धर्म ग्रंथो के अतिरिक्त यह प्रमाणित नहीं कर सकता की इनका कोई अस्तित्व था।

अब आप यदि यह कहें की आप atheist अथवा नास्तिक हैं तो आपसे धर्म और भगवान के विषय में बात करने का कोई औचित्य नहीं है क्योंकि आपके हिसाब से तो वह सत्ता अथवा वस्तु विद्यमान ही नहीं है। और जब उसके अस्तित्व को ही आप नकार रहे हैं तो उस विषय में चर्चा कैसी ???

Darvin theory of Evolution and Big Bang Theory

चलिए अब आपसे प्रश्न करते हैं की क्या आप Darvin theory of Evolution और Big Bang Theory जिसे को सही मानते हैं? और यह भी मानते हैं की सृष्टि की रचा इस प्रकार ही हुइ होगी?

यदि आपका उत्तर हाँ है तो जरा इन तथ्यों पर भी नजर डालिए:

१. चार्ल्स डार्विन 1809 में पैदा हुआ था तथा उसका यह विकासवाद का सिद्धांत सर्व प्रथम 1859 में प्रकाशित हुआ था जिसका नाम था origin of species

२. Big bang theory को Georges Lemagiantre नाम के एक बेल्जियम के पादरी ने 1929 में सर्वप्रथम पहली बार बड़े धमाके के सिद्धांत का सुझाव दिया, जब उन्होंने कहा कि ब्रह्मांड एक ही परमाणु से शुरू हुआ था। एड्विन हबल की टिप्पणियों से इस विचार को प्रमुखता बढ़ावा मिला कि आकाशगंगाएँ सभी दिशाओं में हमसे दूर हो रही हैं, साथ ही 1960 के दशक से कॉस्मिक माइक्रोवेव विकिरण की खोज के कारण इसकी व्याख्या बड़े धमाके की गूँज के रूप में अर्नो ज़ियाज़िया और रॉबर्ट विल्सन द्वारा की गई

तो क्या आप मानते हैं की १८५९ से पहले हमें यह पता ही नहीं था की मानव जीवन की उत्पत्ति कैसे युई और १९२९ से पहले हमें यह भी नहीं पता था की इस सृष्टि की उत्पत्ति कैसे हुई ??

आपको यह भी ज्ञात होगा की विज्ञान और दर्शन शास्त्र में यही फर्क है की विज्ञान 'कैसे' (how) के सिवाय 'क्यो' (why) का उत्तर एक सीमा तक ही दे सकता है । उस सीमा तक पहुँचने के पश्चात प्रकृतिके नियम (Law of nature) का बहाना बना कर प्रश्नो को सीमीत कर दिया जाता है । ऐसे चमत्कार 'क्यों' होते है, कौन सी अदृश्य, अलोकिक शक्ति कारण रूप से सबके भीतर निहित रह कर प्रकृति के नियमों को निर्धारित करती है, इसका पता विज्ञान अभी तक नही लगा पाया। परंतु अध्यात्मशास्त्र (Philosophy) को यह ज्ञान प्राप्त है । स्थूल सूक्ष्म प्रकृति की लीला को विज्ञान और

कारण प्रकृति के अलौकिक रहस्यको अध्यात्मविद्या प्रकट करती है।

इसी प्रकार प्रख्यात वैज्ञानिक John Tyndall whose initial scientific fame arose in the 1850s from his study of diamagnetism and later he made discoveries in the realms of infrared radiation and the physical properties of air has said:

Science understands much of the intermediate phase of things that we call nature, of which it is the product, but science knows nothing of the origin or destiny of nature Who or what made the sun and gave his rays their alleged power ? Who of what made and bestowed upon the ultimate particles of matter their wondrous power of varied interaction ? Science does not know the mystery, though pushed back, remains unaltered (Fragments of Science Vol II)

इसी प्रकार Herbert Spencer ने भी विज्ञान और धर्म के विषय में कहा है- if the religion and science are to be reconciled, the basis of reconciliation must be this deepest, widest and certain of all facts – that the power that the universe manifests to us is utterly inscrutable.

इस आधार पर परखा जाए तो केवल सनातनधर्म ही पूर्ण विज्ञानानुकूल (Scientific) धर्म है। क्योकि यह कोई दस-बीस नियमो से बना हुआ ' सम्प्रदाय' या 'मजहव' नही है। इसके अनन्त नियम हैं। जीव जगत में जन्म लेकर परमात्मा मे लीन होने तक क्रमोन्नति के पथ मे चलनेके लिये मनुष्य अनेक जन्मों मे स्वभावतः जिन नियमोका आश्रय करता है, उन सभी को सनातन धर्म समाविष्ट करता है। ये नियम प्रकृति के निम्नस्तर में कुछ और है, मध्यस्तर मे कुछ और है और उच्च, उच्चतर, उच्चतम स्तरो मे कुछ विशेष ही होते है। ये सब प्रकृतिक नियम है और विज्ञान भी प्रकृति भी के नियम को (Law of nature) ही व्यक्त करता है । अतः सनातन धर्म विज्ञान अनुमोदित धर्म है । इसका प्रत्यक्ष प्रमाण विश्व भर में आयुर्वेद, चिकित्सा शास्त्र और योग की धूम है।

सारांश यह है की आप विज्ञान के सिद्धांत जिनका कोई परीक्षण नहीं किया गया को मानते हैं क्योंकि वही आपको पढाया गया परन्तु उन धर्म शास्त्रों तथा सिद्धांतों का अनुमोदन नहीं करते जो की लगभग 7000 साल से अस्तित्व में हैं

महाभारत में कहा गया है :

संशय: सुगमस्त्र दुर्गमसत्स्य निर्णय:।
दृष्टं श्रुतमनन्तं हि यत्र संशय दर्शनम।।

धार्मिक विषयों में संदेह उपस्थित करना अत्यंत सुगम है किन्तु उसका निर्णय करना बहुत कठिन होता है प्रत्यक्ष और आगम दोनों का ही कोई अंत नहीं है। दोनों में ही संदेह उत्पन्न किया जा सकता है।

तो यदि आप Darvin theory of Evolutionऔर Big Bang Theory को मानते हैं तो यह मानने मे क्या संकट है की सृष्टि की रचना ब्रह्मा जी की थी? श्री राम वास्तव में एक ईश्वरीय राजा थे तथा रामायण उनकी ही गाथा या यथार्थ वर्णन हैं?

दोनों ही किताब में लिखे गए सिद्धांत है और दोनों का ही परीक्षण नहीं किया जा सकता !!!

क्या आर्य जाति बाहर से भारत में आई थी ?

आर्य जातिका आदि निवास स्थान भारतवर्ष ही है, अथवा आर्य जाति कहीं बाहर से यहां आकर बस गये है, इस विषयमें अनेक शकाएं हुआ करती हैं।

Darwin और Big Bang theory की तरह इस theory के जन्मदाता थे Robert Eric Mortimer Wheeler जोकि एक ब्रिटिश पुरातत्वविद् और ब्रिटिश सेना में अधिकारी थे। इन्होने अनेको पुरातत्व विश्लेषणों से पह प्रमाणित करने का प्रयास किया की यूरोप

और भारत मे पाए गए पुरातत्व प्रमाणों में समानता है और इससे साबित होता ही की आर्य जाति कही बाहर से आकर हिंदुस्तान में बस गयी थी । परन्तु प्रश्न रह जाता ही जब हमारी सभ्यता 5000 ईसा पूर्व से पहले भी विद्यमान भी तो क्या यां संभव नहीं है की यहाँ के लोग वह गए हों??

धर्म शास्त्रों मे कहा गया है की मानवी सृष्टि में प्रथम ब्राह्मण जाति की उत्पत्ति हुई है। ये सब ब्राह्मण प्रथम कहां उत्पन्न हुए थे इस विषयमें महाभारत के वनपर्व के अन्तर्गत तीर्थ यात्रा पर्व अध्याय ३२ श्लोक १०२ में लिखा है:

अब गच्छेत राजेन्द्र देविका लोकविश्रुताम् ।
प्रसूतिर्यत्र विमाणां श्रूयते भरतर्षभ ।

यह नारद युधिष्ठिर-संवाद का वचन है। काश्मीर प्रदेशमें वितस्ता (झेलम) नदीके पास सक्षचा तीर्थ और उसके पास देविका नदी है। इसी देविका नदी के तट पर प्रथम ब्राह्मण सृष्टि हुई थी। यह सर्व विदित है की मुसलमानों के भारत आगमन से पूर्व काश्मीर प्रदेश में केवल ब्राह्मण जाति ही बस्ती थी। यह सब स्थान सिन्धुनदी के आसपास हैं, अतः सिन्धु से 'हिन्दु' नाम हुआ है, यह कैसे हुआ उसका एक उदाहरण आपके सामने है

१,२,३,४ को अंग्रेजी में अरेबिक नंबर कहा जाता है और अरेबिक में 'स' का उच्चारण 'ह' होने के कारण इन्हें हिन्ज्से कहा जाता हैं अर्थात जो हिन्द से लाये गए ।

अतः आर्यगण कहीं बाहर से यहां आकर बस गये हैं यह सिद्धान्त आर्य शास्त्रानुसार प्रमाणित नहीं होता है । इसके विषय में दूसरा सिद्धान्त मनुसंहिता में दिया गया है :

आसमुद्रात्तु वै पूर्वादासमुद्रास्तु पश्चिमात् ।
तयोरेवाऽन्तरं गिर्योरार्यावर्त विदुर्वधाः।।
सरस्वतीपदत्योर्देवनद्योर्यदन्तरम् ।
तं देवनिर्मित देश ब्रह्मावर्त प्रचक्षते ॥
कुरुक्षेत्रं च मत्स्याश्च पाञ्चालाः शूरसेनकाः।
एष ब्रह्मर्षिदेशो वै ब्रह्मावर्चादनन्तरः॥
एतदेशप्रसूतस्य सकाशादप्रजन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः॥

जिस भूमि के पूर्व और पश्चिम में समुद्र है, जिसके उत्तर मे हिमालय और दक्षिण में विन्ध्याचल है, उसको आर्यावर्त कहते हैं। आर्यावर्त भारतवर्ष का ही नाम है।

सरस्वती और दृषद्धती नां की दोनों देवनदियों के बीच में जो देवनिर्मित देश है उसका नाम ब्रह्मावर्त देश है। कुरुक्षेत्र, मत्स्यदेश, पाञ्चालदेश और मथुरादेश ब्रह्मावत के अतिरिक्त ये देश ब्रह्मर्षि देश कहलाते हैं । सृष्टि का आदि विकाश इसी देश में हुआ है, सृष्टि की प्रथम दशामें जो ब्राह्मण उत्पन्न हुए थे वह इसी देश में उत्पन्न हुए थे और इन्हीं से आचार, व्यवहार और चरित्र का आदर्श संसार में सर्वत्र व्याप्त होना चाहिये, और वह हुआ भी। क्योंकि पाश्चात्य विद्वानों के सिद्धान्तानुसार पूर्ण पुरुष आर्य गण की ही ज्ञान ज्योति समस्त संसार में फैल गई थी और आज तक उन देशों में प्रकाशं को दे रही है।

सृष्टि के आदिकाल में पूर्णपुरुष आर्यगण भारत के इसी स्थान में उत्पन्न होकर समस्त आर्यवृत में विचरण करते थे, उनके रहनेके कारण इस भूमिका नाम आर्यावर्त हुआ है। शास्त्रोंमे लिखा है :

"आर्याः श्रेष्ठा आवर्तन्ते पुण्यभूमित्वेन वसंत्यत्र इति आर्यावर्तः"

पुण्यभूमि होनेके कारण पूर्णपुरुष आर्यगण यहाँ पर निवास करते थे इसीलिये इस भूमिका नाम आर्यावर्त हुआ है । कुल्लुक भट्टजी ने आर्यावर्च शब्दका यह अर्थ किया है:

"आर्या अत्राऽऽवर्तन्ते पुनः पुनरुद्भवन्तीत्यार्याव" आर्यगण इस स्थानमें पुनः पुनः जन्म ग्रहण करते हैं इसलिये इस स्थानका नाम आर्यावर्त हुआ है।

इन सब प्रमाणों के द्वारा भारतवर्ष ही आर्यगणकी आदि निवासममि है यह बात स्पष्ट रूपसे, सिद्ध होती है। इस विषयमें मुयर साहब ने अपने Sanskrit Text में कहा है:

"They could not have entered from the West, because it is clear that the people who lived in that direction were descended from these very Aryans of India, nor could Aryans have entered India from the North or North-West, because we have no proof from history or philosophy that there existed any civilized nation with a language and religion resembling that of the Aryans"

आर्यगण मध्य एशिया से था जर्मनी के समीपवर्ती स्कैण्डिनेविया से भारत में आये है यह जो बात कोई कोई पश्चिमीय मनुष्य कहा करते है, इसमें उनकी यहीं युक्ति है कि, वहां के अनेक नदनदियां तथा नगर के नाम आर्यग्रन्थों में मिलते है, आर्यों के उपास्य अनेक देव देवियों के नाम के साथ वहां को प्राचीन जातियों के अनेक उपास्य देव देवियों के नामका मेल देखने में आता है और जर्मन भाषा में संस्कृत के अनेक मौलिक शब्द पाये जाते हैं। किन्तु विचार करने पर पता लगेगा कि, इन सबका कारण आर्यजाति का वहां से होना नहीं है, बल्कि वाणिज्य विस्तार, राज्य विस्तार आदिके लिये वहां पर जाना तथा उपनिवेश स्थापन करना है ।

प्राचीन काल में आर्यजाति देशविजय, राज्यविस्तार, देशभ्रमण, उपनिवेशस्थापन, वाणिज्यबृद्धि आदि लिये पृथिवी के सभी देशो में गमन करती थी; इसका प्रमाण पाश्चात्य और एतद्देशीय सभी प्राचीनतत्त्व के वेत्ता विद्वानों ने दिया है।

ऐतरेय ब्राह्मणमें राजा सुदास के विषयमें लिखा है कि, उन्होंने समस्त पृथिवी को जीत करके सर्वत्र ही अपना अधिकार विस्तार किया था ।

एल्फिन्स्टन लिखते हैं कि, पाश्चात्य देश का एक तिहाई अंश प्राचीनकाल में हिन्दुओंके अधीन था कर्नल टाड ने कहा है कि, मुसलमानी राज्य से पहले हिन्दुओ का अधिकार मध्यपशियाके अनेक स्थानों में था। वेबर ने Indian Literature नामक ग्रन्थ में अनेक प्रमाणोके द्वारा बताया है कि, प्राचीन काल में ग्रीस और रोम के साथ आर्यजाति का सम्बन्ध था। हिन्दू राजाऔ के प्रासादौ में ग्रीक

स्त्रियाँ दासी रूप से रहा करती थी और वहाँ के दूत यहां और यहां के दूत वहां प्रायः आया जाया करते थे।

American Dr. Coleman quotes Baron Humbolt who describes-the existence of Hindu remains still found there," Sir William Jones says in the Asiatic Researches Vol I--"It is very remarkable that Peruvians styled their greatest festival Ramat Sıtva, whence we suppose that South America was peopled by the same race who imported into the farthest parts of Asia the rates and history of Rama"

Monsieur Delbos says "The influence of the civilization worked out thousand of years ago in India is around and about us every day of our life It pervades every corner of the civilised world Go to America and you find there, as in Europe, the influence of that civilization which came originally from the banks of the Ganges"

The work called "Homer and Rama" proves the fact that in pre-Christian centuries the wonderful stories of Sri Rama and Sri Krishna were most popular in the Mediterranean World, Greece, Asia Minor and Egypt worshipped the memories of these two great Indian Avataras. Philo, a Syrian philosopher, who lived and preached in Alexandria (Egypt), being himself a disciple of the Brahmans who lived there then, was a great

Krishna Bhakta and left a book called "The Life of Cristos" in the century before Christ, in which many stories of Sri Krishna were embodied. This perhaps became so very popular that the Mediterranean World gave to any important Bhakta the appellation "Kristos"; and in this way even Lord Jesus of Nazareth got the title the Christ" On the rocks of Scandinavian Mountains there are found carved representations of a god in male fori a in dance with a circle of damsels or maids. Linguists discovered that there was an ancient tradition among the people of the country that their God incarnated on earth and was so entrancingly beautiful that the maids of his surroundings entered into the rhapsody of dance, which the carvings represented.

This same tradition was also believed by the ancient Teutons of North Germany and they commemorated their love of the God by performing dances, Public dances were in the beginning there religious as they were in some parts of Greece (Elysium) and Asia Minor and as they are to-day in Bengal and some parts of U, P. in India. The Angles, the Saxons and the Jutes, when they settled in Balmain from North Germany, carried the institution of religious dance But as time rolled on and religion receded from thoughts of men in the West, the institution of public dance was retained, but its religious significance was unfortunately dropped

The most ancient phase of Egyptian civilization which is put as 8000 years old from now is characterized by the worship of Tirumurtis, which they took to those distant banks of the Nile from our country. The Tirumurti worship is inseparable from Image Worship. Certain tribes on the Asiatic coast of the Mediterranean Sea worshipped Kali with eight hands long before perhaps the Phoenicians settled there The Carvings of the Gopi Lila images on the rocky sides of the Scandinavian Mountains are again relegated to antiquities pre-historic. The images of Krishna and Buddha found in the Eastern Mounds of the U. S. A. belong to very, very rem times, between 4 and 5 thousand years from now.

कितने ही पश्चिमी पण्डितोंने तो यह कहा है कि, पृथिवीकी सभी जातियों की उत्पत्ति आर्य जाति से हुई है। आर्यजाति ही सब देशों में भिन्न भिन्न समयपर जा बसी है, जिससे देश, काल तथा आचार-भेदानुसार उनमें अनेक भेद पड़ गये हैं । आचार आदि की भ्रष्टता के कारण आर्य पदवी ले च्युत होकर वह सब अन्यजाति कहलाने लग गये हैं ।

मि० पोकक साहवने कहा है कि, पंजाब के रास्ते से असंख्य हिन्दु यूरोप और एशिया के कई स्थानों में गये थे और वह उन्ही देशों के अधिवासी बन गये है । प्रोफेसर होरेन ने कहा है कि, अन्तविवाद अर्थात् अपने ही समाज में लड़ाई झगड़ेके कारण आर्यगण अन्य देशों में जा बसे है। ऐसा न मानने पर भी इतना तो अवश्य ही मानना

पड़ेगा कि, भारत वर्ष में हिन्दुओं की अगणित विशाल जातियों के बसने के लिये यथेष्ठ स्थान नहीं था, इसलिये अन्यान्य अनेक देशों में प्राचीन हिन्दुगण ने उपनिवेश स्थापन किया था, जिससे संसारभरका विस्तार आर्यजातिले ही हुआ है ।

मनुसंहिता में क्रियालोप और वेदपाठ के अभाव से अनेक क्षत्रियजाति किस प्रकार पतित होकर काम्बोज, शक, यवन, खश, पारद आदि नीचजाति बन गई थी, इसका वर्णन किया गया है।

महाभारत के अनुशासनपर्व और शान्तिपर्व में भी ऐसी अनेक जातियो का वर्णन देखने में आता है, जो आर्यजातिसे ही क्रियालोपके द्वारा बन गई हैं, यथा:

शका यवनकाम्बोजास्तास्ताः क्षत्रियजातयः ।
वृषलत्वं परिगता ब्राह्मणानामदर्शनात् ।।
द्राविडाश्च कलिन्दाथ पुलिन्दाश्चाप्युशीनराः।
कोलिसपा माहिषकास्तास्ताः क्षत्रियजावयः॥
मेकला द्रविडा लाटा पौण्डाः कोन्वशिरास्तथा।
शौण्डिका दरदा दर्वाश्चौराः शर्वरबर्बराः॥
किराता यवनाश्चैव तास्ताः क्षत्रियजातयः।
वृषलत्वमनुमाता ब्राह्मणानामदर्शनात् ॥

(अनुशासन पर्व)

वेदाचार के खण्डित होनेसे शक, यवन आदि जातियाँ क्षत्रिय जातिसे बन गई थी। इस प्रकार शान्तिपर्वमें:

यवनाः किराता गांधाराचीनाः शरवर्वराः ।

शकास्तुशारा कंकाश्च पन्हवाश्चान्ध्रमद्रकाः॥ पौ
ण्ड्राः पुलिन्दा रमठाः काम्बोजाश्चैव सर्वशः।
ब्रह्मक्षत्रप्रसूताश्च वैश्याः शद्राश्च मानवाः ।।
कथं धर्माश्चरिष्यन्ति सर्वे विषयवासिनः ।
मद्धिधैश्च कर्थ स्थाप्याः सर्वे वै दस्युजीविनः॥

यवन, किरात, गान्धार, आदि जो अनेक जातियां चतुवर्ण से बन गई हैं उनका धर्म क्या होगा और उनपर शासन भी किस प्रकारसे होगा ऐसा प्रश्न हो रहा है । इसके द्वारा प्राचीन कालमें आर्यजाति पृथिवी की अन्य सब जातियों पर आधिपत्य करती थी यह भी सिद्ध होता है । प्राचीन आर्यगण इस प्रकार भिन्न भिन्न देशो उपनिवेश स्थापन करने के लिये स्थल पथ और जलपथ दोनों के द्वारा ही सर्वत्र गमनागमन करते थे।

प्राचीनकाल में इस प्रकार पृथ्वी के सर्वत्र जाने आने के लिये आर्यगण के पास यान आदि का भी आभाव नहीं था। प्राचीन इतिहास पुराणादि में जो द्रुतगामी रथ, पोत आदि प्रमाण मिलता है जिनके द्वारा थोड़े समय में ही स्थल, जल तथा आकाशमार्ग में बहुत दूर तक जानेकी बात बताई गई है-उनके द्वारा आधुनिक जहाज, बेलून, एरोन आदिका अस्तित्व सिद्ध होता है। ऋग्वेद के प्रथम मण्डलमें ३७ सूक्तकी प्रथम ऋक् यह है:

क्रीलं का शोमारतमनर्वाणं रथे शुभम् ।
कण्वा अभिप्रगायत ।

इसमें 'अनर्वाण' शब्दका अर्थ 'अश्वरहित' है और 'भारत' शब्द का तात्पर्य मरुत्दत्त या वाष्प बल से है। अतः पूरे ऋक् का यह अर्थ

निकलता है कि, हे कराव गोत्रोत्पन्न महर्षिगण ! जिस प्रकारसे वाष्प के प्रभाव से अश्वरहित रथ चल सकता है, उसकी शिक्षा हमें दीजिये। अतः इस ऋक् के द्वारा अश्व रहित वाष्पीय रथ प्राचीन काल में था, ऐसा सिद्ध होता है। ऋग्वेदके प्रथम मण्डलके १७ सूक्तमें लिखा है:

द्विषो नो विश्वतोमुखाति नावेव पारय।
स नः सिन्धुमिव नावयाति पर्षाः स्वस्तये॥

हे विश्वतोमुख देव ! तुम हमारे शत्रुओं को जहाज से पार करने की तरह दूर भेज दो और हमारे कल्याणके लिये हमे जहाज के द्वारा समुद्र पार ले चलो। इस प्रकार और भी मनेक मन्त्रोके द्वारा प्राचीन कालमें समुद्रगामी पोत आदि के भी अस्तित्वका प्रमाण मिलता है।

केवल समस्त पृथिवी पर अधिकार विस्तारके लिये ही नहीं, अधिकन्तु वाणिज्य आदिके लिये भी प्राचीन भार्यगण पृथिवीके सर्वत्र जाया आया करते थे। ऋग्वेदके चतुर्थ मण्डलके ५५ सूक्तमें धनलाभेच्छु वणिकगणके समुद्रयात्राका वृत्तान्त लिखा हुआ है।

प्रोफेसर म्याक्स डकारने कहा है कि, पृष्टजन्मके २००० वर्ष पहिले आर्यजाति जहाज प्रस्तुत करना जानती थी और समस्त पृथिवीके साथ उसका वाणिज्य कार्य चलता था । प्रोफेसर होरेन साहबने कहा है कि, प्राचीन हिन्दुगण एक प्रकारका जलयान प्रस्तुत करना जानते थे, जिस पर चढ़कर करोमण्डल तट, गंगातटस्थ अनेक देश और ग्रीस तथा मछलीपट्टनके अनेक प्रदेशोंके साथ वह वाणिज्य करते थे।

हिन्दुशास्त्र में भी इसके अनेक प्रमाण मिलते हैं जिससे सिद्ध होता है कि, प्राचीन आर्यगण काष्ठ विज्ञान को भली प्रकारसे जानते थे और उसी विद्याकी सहायतासे उत्तम और दृढ़ जहाज प्रस्तुत करके देशविदेश में जाया करते थे।

वाणिज्यके विषय में प्राचीन आर्य-इतिहास की पर्यालोचना करने से पता लगता है कि, प्राचीन कालमें जो भारत स्वर्णभूमि कहलाता था, आर्यजातिका वाणिज्य ही इसका प्रधान कारण था।

भारतवर्ष के लोह, अलंकार और बहुमूल्य वस्त्र जहाजों के द्वारा यहां से बेबीलोन और टायर देश में जाया करते थे। रेशम, प्रवाल, मुक्ता, हीरा आदि का व्यापार सदा ही मिश्र और तदन्तर्गत अलगजेरिया से था । हस्तिदन्त और नील का वाणिज्य ग्रीस के साथ प्राचीन आर्यजातिका था । रोम के साथ भारतवासियोंका नाना प्रकार के सुगन्धी द्रव्य और मसालोंका व्यापार था, ऐसा प्रो० हीरेन साहबने कहा है। प्राचीन रोम देश की स्त्रियां भारतीय रेशम और सुगन्ध द्रव्य को इतना पसन्द करती थी कि सोने के दाम से उसे खरीदती थी। मैनी साहब ने दुःख प्रकट किया है कि, इस प्रकार से रोम के सकल प्रान्तों से भारतवर्ष में प्रतिवर्षे ४० लाख रुपया चला जाता था। इस प्रकार वाणिज्य के विषय में पाश्चात्य विद्वानों पण्डिनों के प्रमाणों के अतिरिक्त हिन्दूशास्त्रीय प्राचीन और आधुनिक ग्रंथो मे भी भनेक प्रमाण मिलते हैं। यही सब कारण है कि, भाषा, देव, देवी, नगर आदि नामों के साथ उन देशौके नामोंका मेल देखने में आता है। प्रत्युत भारतवर्ष ही आर्य जातिका आदि निवास स्थान है ।

अब आप कहेंगे की यदि ऐसा है की तो हमें पुरातन लेख, किताबें इत्यादि क्यों नही मिलती तो इसका उत्तर है की सन 1193 में

बख्तियार खिलजी द्वारा नालंदा विश्विद्यालय और उसका पुस्तकालय जला दिया गया था। कहा जाता है की नालंदा विश्वविद्यालय के पुस्तकालय में इतनी पुस्तकें थीं की वह छह महीने तक जलता रहा था ।

हमारा इतिहास मिटा दिया गया और उसके बाद हमने वही माना जिसे मुस्लिम, विदेशियों और अंग्रेजों ने हमें समझाया अथवा हमारे इतिहास में लिख दिया ।

जय श्री राम

श्री राम शरणम् समस्तजगतां, राम विना का गति।
रामेण प्रतिहन्ते कलिमलं, रामाय कार्यं नमः।
रामात त्रस्यति कालभीमभुजगो, रामस्य सर्वं वशे ।
रामे भक्ति खण्डिता भवतु में, राम त्वमेवाश्रय ।।

श्री रामचंद्र जी समस्त संसार को शरण देने वाले हैं, श्री राम के बिना दूसरी कौन सी गति है। श्रीराम कलियुग के समस्त दोषों को नष्ट कर देते हैं; अतः श्री रामचंद्र जी को नमस्कार करना चाहिए। श्रीराम से कालरूपी भयंकर सर्प भी डरता है। जगत का सब कुछ श्रीराम के वश में है। श्रीराम में मेरी अखंड भक्ति बनी रहे। हे राम! आप ही मेरे आधार हैं।